B.A. Sanskrit
संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र- षष्ठ

आधारभूत पत्र (Core paper) **Paper Code BSA-S611**	**भारतीय रंगमंच**	**पूर्णाङ्क 100** **सत्रान्त परीक्षा : 70** **सत्रीय मूल्याँकन : 30** **क्रेडिट : 06**

खण्ड – क (Section–A) भारतीय रंगमंच की परम्परा और इतिहास

खण्ड –ख (Section–B) रंगमंच: प्रकार और निर्माण

खण्ड – ग (Section–C) अभिनय भेद : आंगिक, वाचिक, सात्विक तथा आहार्य

खण्ड – घ (Section–D) नाटक में वस्तु, नेता और रस

पाठ्यक्रम का उद्देश्य –

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को पारम्परिक भारतीय रंगमञ्च,एवं नाट्यशास्त्र के सिद्धान्तों का परिचय कराना है।

पाठ्यक्रम –अध्ययनपरिणाम(Course Outcomes)-

- इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रों को नाट्यशास्त्रों के विभिन्न तथ्यों की जानकरी होगी।
- छात्रों की अभिनय क्षेत्र में रुचि बढेंगी तथा इसे अपने कार्य क्षेत्र के रूप में अपना सकेंगे।

घटकानुरूप विभाजन(Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)
भारतीय रंगमंच की परम्परा और इतिहास

घटक (Unit) –1 विभिन्न युगों में मञ्च की उत्पत्ति और विकास; पूर्व-ऐतिहासिक और वैदिक युग।

घटक (Unit) –2 महाकाव्य-पौराणिक युग, राज दरबार रंगमंच (court theatre), मन्दिर रंगमंच,

खुला रंगमंच, आधुनिक रंगमंच, लोक रंगमंच, वाणिज्यिक रंगमंच, राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय रंगमंच।

खण्ड –ख (Section–B)

रंगमंच: प्रकार और निर्माण

घटक (Unit) –1 (क) रंगमंच: प्रकार और निर्माण

खण्ड–ग (Section–C)

अभिनय भेद : आंगिक , वाचिक, सात्विक और आहार्य

घटक (Unit)1– आंगिक एवं वाचिक अभिनय का स्वरूप तथा नाट्य में उपयोगिता

घटक (Unit)2 - सात्विक तथा आहार्य अभिनय का स्वरूप तथा नाट्य में उपयोगिता

खण्ड–घ (Section–D)

नाटक में वस्तु, नेता और रस

घटक (Unit)1– नाट्य में वस्तु और नेता (नायक एवं नायिका भेद) सम्बन्धी ज्ञान

घटक (Unit)2 -नाट्य में रस-विवेचन

Suggested Books/Readings:

1. राधावल्लभत्रिपाठी (सम्पा. एवंसंक.), संक्षिप्त नाट्यशास्त्र, हिन्दीभाषानुवादसहित, वाणी प्रकाशन, दिल्ली 2008
2. राधावल्लभत्रिपाठी, भारतीयनाट्य : स्वरूप एवंपरम्परा, संस्कृत परिषद्, सागरमध्य प्रदेश 1988।
3. हजारीप्रसाद द्विवेदी (सं.), नाट्य शास्त्र कीभारतीयपरम्परा एवं दशरूपक,राजकमलप्रकाशन, दिल्ली 1963।
4. सीतारामझा, नाटकऔररंगमंच, बिहारराष्ट्रभाषापरिषद्पटना 1982।
5. बाबूलालशुक्ल शास्त्री (संपा.), नाट्यशास्त्र (1-4 भाग), चौखम्भा संस्कृत संसथान ,वाराणसी,1984
6. राधावल्लभत्रिपाठी, नाट्यशास्त्रविश्वकोश (1-4 भाग), प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली 1999।
7. राधावल्लभत्रिपाठी,भारतीयनाट्यशास्त्र की परंपरा और विश्व रंगमंच, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
8. केशवरामुसलगांवकर, संस्कृत नाट्यमीमांसा, परिमलप्रकाशन,दिल्ली।
9. रामलखनशुक्ल, संस्कृत नाट्य कला ,मोतीलालबनारसीदास, नईदिल्ली, 1970
10. गोविन्द चन्द्र राय ,नाट्यशास्त्र में रंगमंच के रूप , काशी, 1958।
11. भानुशंकरमेहता, भारत नाट्यशास्त्र तथा आधुनिक प्रासंगिकता, वाराणसी।
12. लक्ष्मीनारायणलाल, रंगमंचऔरनाटककीभूमिका, दिल्ली, 1965।
13. लक्ष्मी नारायण गर्ग, भारतकेलोकनाट्य, हाथरससंगीतकार्यालय, 1961।
14. सीतारामचतुर्वेदी, भारतीयतथापाश्चात्यरंगमंच, हिंदी समिति, लखनऊ 1964।
15. जगदीश चन्द्र माथुर ,परंपराशील नाट्य, बिहार राजभाषा परिषद्, पटना, 1961।

16. C.B. Gupta, Indian Theatre, Varanasi, 1954.
17. R.K. Yajnick, Indian Theatre, London, 1933.
18. Tarla Mehta, Sanskrit Play Production in Ancient India, MLBD, Delhi, 1999.
19. Allardyce Nicoll, The Theatre and Dramatic Theory, London, 19